

अमित्रवातिन् (अ० + घा०) adj. dass. R. 5, 80, 23.

अमित्रघ्न (अ० + घ्न) adj. dass. R. 3, 23, 6. 33, 88.

अमित्रजित् (अ० + जित्) N. pr. ein Sohn Suvarṇa's VP. 463. LIA. I, Anh. XIII.

अमित्रता (von अमित्र) f. Feindschaft: मित्राण्यमित्रतां याति Pāṇkāt. II, 106. 227, 10. Mrāku. 23, 4.

अमित्रदंष्ट्रन् (अ० + दं०) adj. Feinde beschädigend, Agni RV. 4, 14, 4. der Wagen Bṛhaspati's 2, 23, 3.

अमित्रम् (denom. von अमित्र) feindlich gesinnt sein; davon part. अमित्रयत् feindselig: मर्त्यम् RV. 4, 131, 7. 5, 33, 5. जनेम् 10, 180, 3. — Vgl. अमित्राय्.

अमित्रसह (अ० + सह) m. N. pr., Var. von मित्रसह in einigen Purāṇa, VP. 380, N. 11. LIA. I, Anh. IX, N. 18.

अमित्रसाह (अ० + साह) adj. Feinde bewältigend, Indra AV. 4, 20, 4.

अमित्रसेना (अ० + सेना) f. Feindesgeschoss SV. II, 9, 3, 6, 2 (= AV. 3, 1, 3). AV. 5, 20, 6.

अमित्रहन् (अ० + हन्) adj. Feinde vernichtend: (मन्यो) अमित्रह्ना वृत्रह्ना दैत्यह्ना च विश्वा वनूया भूरा तं नैः RV. 10, 83, 3. Indra 6, 43, 14. 10, 134, 3. Soma 9, 96, 12. — VS. 3, 24.

अमित्राय् (denom. von अमित्र) feindlich gesinnt sein: पुत्रो ऽप्यमित्रायते BHār. 3, 74. — Vgl. अमित्रम्.

अमित्रार्थम् (अमित्र + युष्मिन् mit Dehnung des Auslauts) adj. Feinde bekämpfend: अमित्रार्थे मरुतामिव प्रयाः प्रथमज्ञा ब्रह्मणा विश्वमिदं ददुः RV. 3, 29, 15.

अमित्रिन् (von अमित्र) adj. feindlich: ना कस्मै धातमभ्यामित्रिणे नः RV. 4, 120, 8.

अमित्रिय (wie eben) n. Feindliches: वि यो धृष्टो वधिषो वज्रहस्तु विश्वा वज्रममित्रिया शेषाभिः RV. 6, 17, 1. विश्वा वज्रममित्रिया 8, 31, 2.

अमित्रित (3. अ + मि० von मिय्) adj. nicht geschmäht, nicht gereizt RV. 8, 43, 37.

अमियु v. l. für अमि। मियु gaṇa स्वरादि.

अमिष्या (3. अ + मि०) adv. nicht unwahr: इति प्रियार्हं तामुचुस्ते प्रियमप्यमिष्या Ragh. 14, 6.

अमिन् (von 2. अम्) adj. krank Vop. 2, 20.

अमिनै (von 2. अम्) adj. ungestüm, stürmisch: मरुता इन्द्रो नूत्रदा चर्यणिप्रा उत द्विवर्क्य अमिनः सहेभिः RV. 6, 19, 1. आ द्विवर्क्य अमिना पातिर्द्धः 10, 116, 4. Nir. 6, 16. Die Commentt.: unermesslich; unvergleichlich; unverletzlich.

अमिनत् (3. अ + मि० von मी) 1) nicht versehrend: अमिनती देव्यानि व्रतानि प्रमिनती मेनुष्या युगानि RV. 1, 124, 2. 92, 11. 4, 5, 6. — 2) unversehrt: (आवापृथिवी) अमिनती RV. 4, 56, 2.

अमिश्र (3. अ + मिश्र) adj. ungemischt, ohne Theilnahme Anderer: तद्वा अमिश्रमेव वसूनां प्रातःसवनम् Āt. Br. 4, 3, 5, 1.

अमिष n. 1) Fleisch AK. 2, 6, 2, 14, Sch. — 2) Vergnügen (लौकिकसुख) UNādik. im ĀKDr. — 3) Truglosigkeit (क्लृप्ताभाव) ĀKDr. — Vgl. आमिष.

अमी s. 1. अदम्.

अमीतवर्ण (3. अ - मीत [von मी] + वर्ण) adj. von unversehrter, unverlöschter Farbe: उपसतः RV. 4, 51, 9.

अमीव (von 2. अम्) 1) f. ० वा. a) Plage, Drangsal, Schrecken: व्यपिस्मद्वेषो वित्तरं व्यक्ते व्यमीवाद्यातयस्वा विपूचीः RV. 2, 33, 2. येन सूर्योतिषा बाधसे तमो जगच्च विश्वमुदियार्थं भानुना। तेनास्मादिश्यामविरामनाल्लुतिमयामीवामप दुष्प्रयं सुव ॥ 10, 37, 4. अयामीवामप विश्वामनाल्लुतिमयारीतिम् 63, 12. 1, 33, 9. VS. 11, 47. 12, 105. AV. 4, 10, 3. 7, 85, 1. — b)

Dränger, Plagegeist (oft von dämonischen Wesen): तन्मयतो ऽहिं वृक् रक्षांसि सनैम्यस्मद्युषवन्नमीवाः RV. 7, 38, 7. अमे तमस्मद्युषोद्यमीवा अनेमित्रा अन्धमेत कृष्टीः 1, 189, 3. अयामीवा भवतु रत्तसा सह 9, 83, 1. 3, 13, 1. 7, 1, 7. 10, 98, 12. AV. 8, 7, 14. 19, 34, 9. 44, 7. — c) Leiden, Krankheit (auch die persönlich gedachte Ursache der Krankheit): सोमार्द्रा विवृक्तं विपूचीममीवा (sic) या नो गयमाविशं। अरे बाधेया निर्वृतिम् RV. 6, 74, 2. यस्ते गर्भममीवा दुर्गामा (subst. und subj. des Satzes) योनिमाशये। अग्निष्टे ब्रह्मणा सह निष्कृत्यादमनीनशत् 10, 162, 2. Nir. 6, 12. — 2) n. Leiden, Schmerz: न हि तमीदृशं कृत्वा तस्यामीवं दशनन। जीवितुं शक्यति चिरं विषं पीबेत्तु उर्मतिः ॥ R. 3, 39, 23. — Vgl. अममीव und die folg. comp.

अमीवर्चान् (अ० + चा०) adj. f. ३ Leiden, Plagen (Plagegeister) ver-scheuchend: (वचः) शं यत्स्तोताभ्यं आपये भवति खुमदमीवर्चान्तम् RV. 7, 8, 6. उप प्रागदिवो अमी रत्तारुहानीवर्चान्तः AV. 1, 28, 1. आप इहा उ भेषु जीरोयो अमीवर्चान्तोः RV. 10, 137, 6. 1, 12, 7. AV. 8, 2, 28. 19, 44, 7.

अमीवर्हन् (अ० + हन्) adj. Leiden, Plage tilgend, Bṛhaspati RV. 4, 18, 2. Vāstoshpati 7, 53, 1. गयस्यानो अमीवर्हा वसुवित्पुष्टिवर्धनः। सुमित्रः सोमो भव ॥ 4, 91, 12. तं बार्हं भवमीतानां प्रपन्नानां भयापहम्। आपृक्के शापनिर्मुक्तः पादस्पर्शादमीवर्हन् ॥ Buāg. P. im ĀKDr.

अमु ein Pronominalstamm, der mehrere casus zu अदम् beisteuert und ausserdem in अमुक, अमुतस्, अमुत्र, अमुया, अमुया, अमुर्ह, अमुवत् sich erhalten hat.

अमुक (von अमु) pron. der und der, die Stelle eines Namens vertretend und unserm N. N. entsprechend: अहममुकः नास्ती Jāṭ. 2. 87. अमुकेन 88. अमुकपुत्र der Sohn von N. N. 86. अमुकसूनु 88. Manlon. zu VS. 10, 30. — Vgl. u. 1. अदम्.

अमुक्त (3. अ + मुक्त von मुच्) 1) adj. nicht losgelassen; nicht abgeschossen. — 2) n. (nämlich अस्त्र) eine Waffe, die nicht geworfen wird, sondern in der Hand bleibt (z. B. ein Schwert) H. 774. Madhus. in Ind. St. 1, 21, 16. fgg.

अमुक्तरुत (अमुक्त + रुत) adj. f. आ dessen Hand sich nicht öffnet, karg, geizig: व्यये चामुक्तरुतया M. 5, 150.

अमुख (3. अ + मुख) adj. ohne Mund Āt. Br. 14, 6, 8, 8. — Bṛh. Ār. Up. 3, 8, 8.

अमुग्ध (3. अ + मुग्ध) adj. nicht verwirrt, nicht verkehrt: तस्य कैयामुग्धानुव्रता प्रजा आपते Āt. Br. 3, 7, 1, 22.

अमुच् das Nichtlösen Āt. Br. 1, 2, 1, 16.

अमुची (3. अ + मुची f. von मुच्) f. die Nichtloslassende, Bez. eines dämon. Wesens: अमुच्या दूहः पाशान् AV. 16, 6, 10.

अमुतस् (von अमु) adv. Vop. 7, 97. Gegens. इतम्. 1) von dort, dort: इत आत्रातो अमुतः कुतश्चित् RV. 4, 179, 4. प्रेतो मुद्यामि नामतः 10, 83, 23. अवाच्चमिन्द्रममृतो हवामहे AV. 5, 3, 11. RV. 9, 81, 2. 10, 128, 10. 133, 2. VS. 3, 60. AV. 5, 8, 3. 7, 113, 1. u. s. w. — 2) von dort, d. i. vom Himmel her: